



वैदिक वाङ्मय में नारी और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कार, वर्णाश्रम-धर्म तथा सामाजिक अवस्था एक समीक्षात्मक अध्ययन

Dipak kumar Mahato

Assistant professor of Sanskrit
Kabikankan Mukundaram Mahavidyalaya,
keshabpur, Hooghly.
Email- dipakmahato15.3.92@gmail.com

How to Cite this Article:

Mahato, D. K. (2026). वैदिक वाङ्मय में नारी और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कार, वर्णाश्रम-धर्म तथा सामाजिक अवस्था एक समीक्षात्मक अध्ययन. International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management, <i>02</i>(03).
<https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i3.148>

License:

This article is published under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and the source are credited. © The Author(s). Published by International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management.



<https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i3.148>

Abstract:

वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति का प्राचीनतम तथा सर्वाधिक प्रामाणिक ज्ञानकोश है। इसमें न केवल धर्म, दर्शन और आध्यात्मिकता का प्रतिपादन हुआ है, बल्कि सामाजिक संरचना, नैतिक मूल्य और मानव जीवन के आदर्शों का भी विस्तृत चित्रण मिलता है। वैदिक साहित्य में नारी को केवल गृहस्थ जीवन की आधारशिला ही नहीं, बल्कि ज्ञान, शक्ति और संस्कृति की वाहिका के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

इस शोध-लेख में वैदिक वाङ्मय में नारी की स्थिति, उसके अधिकार, कर्तव्य, शिक्षा, संस्कार तथा वर्णाश्रम-धर्म में उसकी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। साथ ही आधुनिक समाज में नारी की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया है कि वैदिक आदर्शों से वर्तमान समाज क्या प्रेरणा ग्रहण कर सकता है।

वैदिक ग्रंथों में गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा जैसी विदुषी स्त्रियों का उल्लेख मिलता है, जो यह सिद्ध करता है कि उस समय नारी को शिक्षा तथा आध्यात्मिक उन्नति के समान अवसर प्राप्त थे। वर्तमान समय में यद्यपि नारी शिक्षा और अधिकारों में प्रगति हुई है, फिर भी कई सामाजिक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। यह शोध-पत्र वैदिक आदर्शों और आधुनिक सामाजिक वास्तविकताओं के बीच संवाद स्थापित करने का प्रयास करता है।

Keywords: वैदिक वाङ्मय, नारी, संस्कार, वर्णाश्रम-धर्म, भारतीय संस्कृति, सामाजिक अवस्था।

प्रस्तावना:

भारतीय संस्कृति की जड़ें वैदिक परंपरा में गहराई से निहित हैं। वैदिक वाङ्मय केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह मानव सभ्यता के विकास का एक महान दस्तावेज भी है। इसमें मानव जीवन के प्रत्येक आयाम—धर्म, समाज, शिक्षा, परिवार, राजनीति और नैतिकता—का समग्र चित्रण मिलता है।

नारी के बिना समाज की कल्पना असंभव है। भारतीय परंपरा में नारी को सृष्टि की सह-सर्जिका माना गया है। वैदिक वाङ्मय में नारी को सम्मान, स्वतंत्रता और आध्यात्मिक उन्नति का अधिकार प्रदान किया गया था।

ऋग्वेद में कहा गया है— “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।” अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है। यह श्लोक भारतीय समाज में नारी के उच्च स्थान को दर्शाता है। प्राचीन भारत में नारी को केवल गृहिणी के रूप में नहीं देखा जाता था, बल्कि वह विदुषी, दार्शनिक, अध्यापिका, कवयित्री और आध्यात्मिक साधिका भी थी। इस शोध का उद्देश्य है— वैदिक वाङ्मय में नारी की स्थिति का अध्ययन, संस्कार और वर्णाश्रम-धर्म में नारी की भूमिका, वैदिक समाज की सामाजिक अवस्था,



वैदिक वाङ्मय का स्वरूप। वैदिक वाङ्मय मुख्यतः चार वेदों में विभाजित है— ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद इनके अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद भी वैदिक साहित्य का अंग हैं।

वैदिक साहित्य में जीवन को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। नारी इन सभी पुरुषार्थों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वैदिक वाङ्मय में नारी की अवधारणा वैदिक साहित्य में नारी को शक्ति, ज्ञान और सृजन की प्रतीक माना गया है।

ऋग्वेद में कहा गया है— “अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमायज्ञियानाम्” (ऋग्वेद 10.125)। अर्थ— मैं राष्ट्र की संचालिका हूँ, मैं ज्ञान देने वाली हूँ और यज्ञ में प्रथम पूजनीय हूँ। यहाँ देवी वाक् के माध्यम से नारी की शक्ति और ज्ञान की अभिव्यक्ति की गई है। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक समाज में नारी को केवल घरेलू भूमिका तक सीमित नहीं किया गया था।

वैदिक समाज में नारी की सामाजिक स्थिति— वैदिक युग में नारी को समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। शिक्षा का अधिकार यज्ञ में भागीदारी दार्शनिक संवाद में सहभागिता, विवाह में स्वतंत्रता, उपनिषदों में गार्गी और याज्ञवल्क्य के बीच दार्शनिक संवाद प्रसिद्ध है। यह दर्शाता है कि उस समय स्त्रियाँ भी दार्शनिक विमर्श में भाग लेती थीं।

संस्कार व्यवस्था और नारी— भारतीय संस्कृति में जीवन को पवित्र और अनुशासित बनाने के लिए सोलह संस्कार निर्धारित किए गए हैं।

संस्कार शब्द का अर्थ है मनुष्य के व्यक्तित्व को शुद्ध और परिष्कृत करना। मुख्य संस्कार हैं— गर्भाधान, पुंसवन सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, उपनयन, विवाह, अन्त्येष्टि इन संस्कारों में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विशेषकर विवाह संस्कार में पति-पत्नी को जीवन का सहचर माना गया है। ऋग्वेद में कहा गया है— “सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रवां भव” (ऋग्वेद 10.85)। अर्थ— हे वधू! तुम अपने ससुराल में सम्राज्ञी बनो। यह श्लोक नारी के सम्मान और अधिकार को दर्शाता है।

वैदिक युग की सामाजिक अवस्था वैदिक समाज का आधार था— परिवार, शिक्षा, धर्म, नैतिकता, परिवार में नारी को गृहलक्ष्मी माना जाता था। पत्नी को ‘अर्धांगिनी’ कहा गया है, जिसका अर्थ है— पति का आधा शरीर। अर्थात् पति-पत्नी मिलकर ही जीवन की पूर्णता प्राप्त करते हैं। सौंदर्य और काव्यात्मक वर्णन भारतीय साहित्य में नारी का वर्णन केवल शारीरिक सौंदर्य तक सीमित नहीं है। कवि कहते हैं—

“नारी है संस्कृति की धारा,
करुणा का अमृत भरा किनारा।”

वेदों की वह वाणी बनकर, जग में ज्ञान सुधा बरसाती। यह वर्णन नारी की आध्यात्मिक वर्णाश्रम-धर्म और वैदिक समाज में नारी भारतीय समाज की संरचना का मूल आधार वर्णाश्रम-धर्म है। यह व्यवस्था समाज को संतुलित और सुव्यवस्थित बनाने के लिए निर्मित की गई थी। वर्णाश्रम दो शब्दों से मिलकर बना है— वर्ण + आश्रम वर्ण समाज के कार्य-विभाजन को दर्शाता है और आश्रम मानव जीवन के चार चरणों को। चार वर्णः—

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र। चार आश्रमः— ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास। इन सभी व्यवस्थाओं में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। गृहस्थ आश्रम और नारी चारों आश्रमों में गृहस्थ आश्रम को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि यही आश्रम अन्य तीन आश्रमों का पालन-पोषण करता है। मनुस्मृति में कहा गया है—

“यथा वायुं समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वदेहिनः।

तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः॥”

— अर्थात् जिस प्रकार सभी प्राणी वायु पर आश्रित रहते हैं, उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थ आश्रम पर निर्भर हैं। गृहस्थ आश्रम की आधारशिला है— नारी। पत्नी को गृह की लक्ष्मी और धर्म-सहधर्मिणी कहा गया है। पत्नी का आध्यात्मिक स्थान वैदिक यज्ञों में पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य मानी जाती थी। “अयज्ञियो वै एष योऽपत्नीको।” अर्थ— जिस पुरुष की पत्नी नहीं है, वह यज्ञ करने के योग्य नहीं है। इससे स्पष्ट होता है कि धार्मिक कार्यों में भी स्त्री की सहभागिता आवश्यक थी। वैदिक ऋषिकाएँ वैदिक साहित्य में कई स्त्रियाँ ऋषिका के रूप में प्रसिद्ध हैं। उन्होंने मंत्रों की रचना की और ज्ञान का प्रसार किया। मुख्य ऋषिकाएँ थीं— गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, इन विदुषी स्त्रियों ने भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता को समृद्ध किया। गार्गी का दार्शनिक संवाद बृहदारण्यक उपनिषद में गार्गी और याज्ञवल्क्य का संवाद अत्यंत प्रसिद्ध है। गार्गी ने ब्रह्म के स्वरूप के बारे में प्रश्न किया। यह दर्शाता है कि उस समय स्त्रियाँ भी दार्शनिक चर्चा में भाग लेती थीं। गार्गी ने पूछा— “कस्मिन्नु खलु अखिलं जगत् ओतं च प्रोतं च?”— अर्थात् यह सम्पूर्ण जगत् किसमें ओत-प्रोत है? यह प्रश्न ब्रह्मांड के अंतिम सत्य की खोज का प्रतीक है। मैत्रेयी और आत्मविद्या मैत्रेयी का उल्लेख भी बृहदारण्यक उपनिषद में मिलता है। याज्ञवल्क्य ने अपनी संपत्ति दो पत्नियों— कात्यायनी और मैत्रेयी—के बीच बाँटने का निश्चय किया। तब मैत्रेयी ने कहा— “यदि अहं एतेन सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्याम्, किं तेन अमृतत्वं स्याम्?”—



अर्थात् यदि मुझे सारी पृथ्वी की संपत्ति मिल जाए, तो क्या उससे अमरत्व प्राप्त होगा? याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया— धन से अमरत्व प्राप्त नहीं हो सकता। इस संवाद से स्पष्ट होता है कि वैदिक नारी केवल भौतिक जीवन तक सीमित नहीं थी, बल्कि आत्मज्ञान की खोज में भी रुचि रखती थी। लोपामुद्रा का वैदिक काव्य ऋग्वेद में लोपामुद्रा द्वारा रचित मंत्र भी मिलते हैं। उनका काव्य प्रेम, आध्यात्मिकता और जीवन के संतुलन को दर्शाता है। ऋग्वेद में कहा गया है— “इमं मे अगस्त्य श्रुधि हव्यम्।” यह मंत्र पति-पत्नी के आध्यात्मिक संबंध का प्रतीक है।

वैदिक समाज में शिक्षा वैदिक काल में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था ज्ञान चरित्र निर्माण आध्यात्मिक विकास नारी को भी शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। स्त्रियाँ दो प्रकार की होती थीं— ब्रह्मवादिनी — जो जीवन भर अध्ययन करती थीं। सद्यःवधू — जो विवाह के बाद गृहस्थ जीवन अपनाती थीं। ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ वेदों का अध्ययन करती थीं। विवाह और नारी की स्वतंत्रता वैदिक समाज में विवाह केवल सामाजिक बंधन नहीं था, बल्कि यह धार्मिक संस्कार था। ऋग्वेद में विवाह मंत्र अत्यंत सुंदर हैं। “सखा सप्तपदा भव।” —अर्थात् इन सात कदमों के साथ तुम मेरे मित्र बनो। यह विवाह को मित्रता और समानता का संबंध बनाता है। वैदिक समाज की नैतिकता वैदिक समाज में नैतिक मूल्यों का विशेष महत्व था। मुख्य मूल्य थे—सत्य अहिंसा दया करुणा सहिष्णुता नारी इन मूल्यों की संरक्षिका मानी जाती थी। नारी और संस्कृति नारी को संस्कृति की वाहिका कहा गया है। कवि कहते हैं—

“नारी केवल देह नहीं है,
वह संस्कृति की ज्योति है।
वह जीवन की मधुर वीणा,
और करुणा की स्रोत है।”

सामाजिक संतुलन— वैदिक समाज में पुरुष और नारी के बीच संतुलन था। दोनों को एक दूसरे का पूरक माना गया। उपनिषद में कहा गया है— “अर्धं वै एष आत्मनः यत् पत्नी।” अर्थ — पत्नी पुरुष के आत्मा का आधा भाग है। को दर्शाता है। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारी और सामाजिक अवस्था समय के साथ समाज में निरन्तर परिवर्तन होते रहे हैं। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक नारी की स्थिति में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। कभी नारी को अत्यंत सम्मान प्राप्त हुआ, तो कभी सामाजिक रूढ़ियों के कारण उसकी स्थिति कमजोर भी हुई। आधुनिक काल में शिक्षा, विज्ञान और लोकतंत्र के विकास के कारण नारी की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है। आज महिलाएँ शिक्षा, राजनीति, विज्ञान, कला, साहित्य और प्रशासन जैसे अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। भारतीय संविधान ने भी स्त्री-पुरुष समानता का सिद्धांत स्वीकार किया है। संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 में समान अधिकारों की व्यवस्था की गई है। फिर भी समाज के कई क्षेत्रों में अभी भी असमानता दिखाई देती है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम प्राचीन वैदिक आदर्शों से प्रेरणा लेकर नारी के सम्मान और अधिकारों को सुदृढ़ करें। वैदिक आदर्श और आधुनिक वास्तविकता यदि वैदिक समाज और आधुनिक समाज की तुलना की जाए तो अनेक रोचक तथ्य सामने आते हैं। वैदिक काल में नारी को शिक्षा और ज्ञान प्राप्त करने की स्वतंत्रता थी। वह यज्ञों में भाग लेती थी और दार्शनिक चर्चाओं में भी सक्रिय रहती थी। उपनिषदों में वर्णित गार्गी और याज्ञवल्क्य का संवाद इस बात का प्रमाण है कि उस समय स्त्रियाँ भी ब्रह्मज्ञान की चर्चा करती थीं। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से पूछा— “कस्मिन्नु खलु अखिलं जगत् ओतं च प्रोतं च?”—अर्थात् यह सम्पूर्ण जगत् किस तत्व में स्थित है? यह प्रश्न ब्रह्मांड के परम सत्य की खोज का प्रतीक है। आधुनिक युग में भी महिलाएँ विज्ञान और दर्शन के क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। नारी शिक्षा का महत्व नारी शिक्षा समाज के विकास का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। महात्मा गांधी ने कहा था— “यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन यदि आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।”

वैदिक युग में भी स्त्री शिक्षा को महत्व दिया गया था। उस समय स्त्रियों को ब्रह्मवादिनी और सद्यःवधू दो वर्गों में विभाजित किया गया था। ब्रह्मवादिनी वे स्त्रियाँ थीं जो जीवन भर वेदों का अध्ययन करती थीं। सद्यःवधू वे थीं जो विवाह के बाद गृहस्थ जीवन में प्रवेश करती थीं।

संस्कार और सामाजिक परिवर्तन— संस्कार भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। संस्कारों का उद्देश्य मनुष्य के जीवन को शुद्ध और परिष्कृत बनाना है। भारतीय परंपरा में सोलह संस्कारों का वर्णन मिलता है। इन संस्कारों का संबंध जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के प्रत्येक चरण से है। संस्कार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और नैतिक शिक्षा के माध्यम भी हैं। नारी इन संस्कारों की मुख्य संवाहक होती है। परिवार में बच्चों को संस्कार देने का सबसे बड़ा कार्य माता ही करती है। इसीलिए भारतीय परंपरा में कहा गया है—

“माता गुरु तरा भूमेः।” अर्थ — माता पृथ्वी से भी अधिक महान गुरु है। नारी और संस्कृति का संरक्षण



नारी को भारतीय संस्कृति की वाहिका कहा गया है। वह परिवार और समाज में परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित रखती है। कवि ने नारी की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है— नारी है जीवन की धारा, संस्कृति की उज्ज्वल ज्योति। उससे ही सजता संसार, उससे ही जग में प्रीति। नारी केवल परिवार का संचालन ही नहीं करती, बल्कि समाज के नैतिक मूल्यों की भी रक्षा करती है। सामाजिक चुनौतियाँ मे आधुनिक समाज में नारी की स्थिति में सुधार हुआ है, फिर भी कई समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। मुख्य समस्याएँ हैं— लैंगिक भेदभाव शिक्षा में असमानता सामाजिक हिंसा आर्थिक असमानता रूढ़िवादी मानसिकता — इन समस्याओं का समाधान शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक सुधारों के माध्यम से ही संभव है।

नारी सशक्तिकरण की आवश्यकता— आज के समय में नारी सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण सामाजिक विषय बन गया है। नारी सशक्तिकरण का अर्थ है— स्त्रियों को शिक्षा देना, आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करना, सामाजिक सम्मान सुनिश्चित करना, निर्णय लेने का अधिकार देना, वैदिक परंपरा भी इसी आदर्श को स्वीकार करती है।

ऋग्वेद में कहा गया है— “अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां।” — अर्थात् मैं राष्ट्र की संचालिका हूँ। यह मंत्र नारी की शक्ति और नेतृत्व क्षमता का प्रतीक है। वैदिक दृष्टि से नारी वैदिक साहित्य में नारी को तीन प्रमुख रूपों में देखा गया है माता पत्नी विदुषी माता के रूप में वह जीवन का आधार है। पत्नी के रूप में वह गृहस्थ जीवन की सहधर्मिणी है। विदुषी के रूप में वह ज्ञान और संस्कृति की वाहिका है।

उपसंहार:

इस शोध अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक वाङ्मय में नारी को अत्यंत सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। वह केवल परिवार की संरक्षिका नहीं थी, बल्कि ज्ञान, संस्कृति और आध्यात्मिकता की प्रतिनिधि भी थी। गार्गी, मैत्रेयी, घोषा और लोपामुद्रा जैसी ऋषिकाओं के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को बौद्धिक और आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त थी।

समय के साथ सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन हुआ और कई रूढ़ियाँ उत्पन्न हुईं, जिनसे नारी की स्थिति प्रभावित हुई। आधुनिक युग में शिक्षा और सामाजिक सुधारों के कारण स्त्रियों की स्थिति में पुनः सुधार हो रहा है। आज आवश्यकता है कि समाज वैदिक आदर्शों को पुनः समझे और नारी के सम्मान तथा समान अधिकार को सुनिश्चित करे। नारी केवल समाज का एक अंग नहीं है, बल्कि वह संस्कृति और सभ्यता की आधारशिला है। उसके बिना समाज की कल्पना अधूरी है।

संदर्भ सूची (References)

ऋग्वेद संहिता। पटना: वाणी प्रकाशन, २०१३।

उपनिषद् ग्रन्थावली। लखनओ: गीताप्रेस, १९८६।

गुप्त, जयकृष्ण हरिदास। *मनुस्मृति*। वनारस सिटि: चौखम्बा संस्कृत सिरिज, १९९२।

काणे, पी.वी. – धर्मशास्त्र का इतिहास, पुणे: भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, १९८७।

शर्मा, रामशरण। *प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास*। नयी दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, १९९०।

मुखर्जी, राधाकमल। *भारतीय संस्कृति*। दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्स, १९५९।

द्विवेदी, कपिलदेव। *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति*। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, २०१०।

दासगुप्ता, एस.एन.। *भारतीय दर्शन का इतिहास*। जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादेमी, १९८८।

Rgveda-Samhitā with the commentary of Sāyanācārya (Vol-I). Ed. By N.S. Sontakke, Poona: Vaidika Samsodhana Mandala. 1942.